Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 15, Issue No. 12, December-2018, ISSN 2230-7540

हिन्दी कविता में राष्ट्रीय चेतना

Ramita Devi*

M.A. in Hindi (UGC NET) PGT in Hindi

सार - ***राष्ट्र के प्रति अपनत्व तथा अगाध प्रेम की भावना ही राष्ट्रीयता कहलाती है। आज राष्ट्रीयता एक प्रबल शक्ति एवं प्रभावशाली प्रेरणा है। राष्ट्रीयता का संबंध केवल जड़भूमि से न होकर आंतरिक होता है। अपने देश के अगाध प्रेम में अपनी संस्कृति, सभ्यता एवं धर्म के प्रति गौरव में, अपने देश की सामाजिक, धार्मिक और राजनीतिक दशाओं में सुधार के प्रयत्न आदि में वह राष्ट्रीय भावना प्रस्फुटित होती है। राष्ट्रीयता की भावना व्यक्ति को अपने राष्ट्र के लिए उच्च कोटि के शौर्य तथा बलिदान के लिए प्रेरणा देने वाली सामूहिक भावना की एक ऐसी उच्चतम अभिव्यक्ति है जिसका इतिहास-निर्माण में बहुत बड़ा हाथ है। राष्ट्रीयता की भावना एक मानसिक अनुभूति अथवा मन की एक स्थिति है।***

कुंजी शब्द - ***राष्ट्रीय भावना, सभ्यता, संस्कृति, बलिदान, रंगभेद, जातिगत भेद भावना।***

----------X----------

राष्ट्रीयता के कारण समाज में ऐसी स्नेहशीलता निर्माण हो जाती है, जिसकी वजह से लोग एकता के सूत्र में बंध जाते हैं। ‘‘राष्ट्रीयता के लिए देश की अथवा राज्य की इकाई होना आवश्यक है। यह बात दूसरी है कि विभिन्न युगों में देश अथवा राज्य की सीमाएं घटती-बढ़ती हैं। सीमाओं के अनुपात में ही राष्ट्रीयता के दृष्टिकोण में अंतर आ जाता है।’’[1] हमारी राष्ट्रीय भावना रंगभेद, जातिगत भेद आदि से ऊपर उठकर राष्ट्र के प्रति तन-मन-धन से समर्पित होने की रही है। प्राचीनकाल से लेकर आधुनिक हिन्दी कविता में इस राष्ट्रीय भावना का खूब वर्णन मिलता है। आधुनिक हिन्दी कविता की ‘राष्ट्रीय काव्यधारा’ के कवियों का तो इसमें महत्वपूर्ण योगदान रहा है।

विषय वस्तु

किसी भी देश का साहित्य वहाँ की राजनैतिक, सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक आदि परिस्थितियों के परिणामस्वरूप बनता व बदलता है। ‘‘साहित्य का मानव जीवन से चिरंतन सम्बन्ध है। साहित्य का स्रष्टा मनुष्य है और मनुष्य के लिए ही साहित्य की सृष्टि है। मानव जीवन ही साहित्य का उपादान और विषयवस्तु रहा है और रहेगा। मानव जीवन विकासशील वस्तु है, इसीलिए साहित्य भी विकासशील वस्तु है।’’2

ज्यों-ज्यों परिस्थितियाँ बदलती हैं हमारा साहित्य भी उसी के अनुरूप नया रूप लेने लगता है। भारतीय राष्ट्रीयता में अंग्रेज जाति के संपर्क से परिवर्तन आया। ‘‘राष्ट्रीयता भारत के लिए नवीन विश्वास थी। इसके पूर्व इस देश में यह बात अपरिचित थी।3 19वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में भारत में देश-प्रेम, राष्ट्रीय भावना जागृत होने लगी। शासकों से ही प्रेरणा लेकर भारतीय लोगों के मन में स्वाधीनता के भाव पैदा होने लगे। स्वामी विवेकानन्द, रामकृष्ण परमहंस, स्वामी दयानंद सरस्वती, लोकहितवादी चिपलूणकर, भारतेन्दु हरिश्चन्द्र और उनके मण्डल के अन्य कवि एक साथ मैदान में आए। इन्होंने लोगों में राष्ट्रीयता की भावना जगाने का स्तुत्य प्रयास किया। इन्होंने राष्ट्रीयता के जो बीज बोए थे, उन्हीं को पल्लवित करने का कार्य आधुनिक हिन्दी कविता के कवियों ने किया। अपने देश के प्रति हरेक व्यक्ति का लगाव रहता है। भारतवासी तो अपनी भूमि के प्रति सदा पुनीत भावना ही रखते आए हैं। इसी पुनीत भावना का वर्णन हिन्दी कवियों ने किया है।

भारत महिमा वर्णन

प्रसद का ‘‘अरूण यह मधुमय देश हमारा’’ गीत भारत की महिमा का वर्णन करता है। इस गीत में भारतीय संस्कृति की गरिमा पूर्ण रूप से झलकती है और देशप्रेम की दृष्टि से यह सर्वश्रेष्ठ गीतों में से एक है। प्रसाद जी लिखते हैं -

अरूण यह मधुमय देश हमारा

www.ignited.in

जहाँ पहुँच अनजान क्षितिज को मिलता एक सहारा।

सरस तामरस गर्भ विभा पर नाच रही तरूशिखा मनोहर

छिटका जीवन हरियाली परमंगल कुंकुम सारा।

लघु सुरधनु से पंख पसारे शीतल मलय समीर सहारे

उड़ते खग जिस ओर मुँह किये समझ नीड़ निज प्यारा[4]

प्रत्येक भारतीय को गर्व है कि उसने भारत की भूमि पर जन्म लिया है उसकी यह भावना देश प्रेम के रूप में दृष्टिगोचर होती है। केवल हिन्दी ही नहीं उर्दू के कवियों ने भी अपनी इस देशप्रेम की भावना को व्यक्त किया है-

"सारे जहाँ से अच्छा हिन्दोस्ताँ हमारा

हम बुलबुले हैं इसकी यह गुलसितां हमारा

पर्वत वो सबसे ऊँचा हमसाया आसमाँ का

गोदी में खेलती हैं उसके हजारों नदियाँ

गुलशन है जिनके दम से रश्के जनां हमारा।।"5

निराला ने भी मातृभूमि के प्रति अगाध प्रेम प्रकट किया है। निराला के गीत 'भारति जय विजय करें' में भारत की सुषमा तथा सागर आदि का सुन्दर वर्णन मिलता है -

भारति जय विजय करें

कनक शस्य कमल करें।

लंका पतल शतदल गर्जितोर्भि सागर जल

धोता शुचि चरण-युगल स्तव कर बहु-अर्थ भरे।

तरू-तृण-वन-लता वसन अंचल में खचित सुमन

गंगा ज्योतिर्जल कण-धवल धार हार गले।

मुकुट शुभ्र हिम तुषार प्रण-प्रणव ओंकार

ध्वनित दिशाएँ उदार शतमुख शतरव मुखरे।6

अतीत का गौरवगान

भारत का अतीत बड़ा ही समृद्ध और वैभवपूर्ण रहा है। भारत की सभ्यता एवं संस्कृति भी बहुत प्राचीन है। भारतीय सभ्यता व संस्कृति अनेक घात-प्रतिघातों के बाद भी अत्यंत समृद्ध है। इकबाल ने इसके बारे में लिखा है -

"कुछ बात है कि हस्ती मिटती नहीं हमारी

सदियों रहा है दुश्मन दौरे जहां हमारा।

यूनान मिश्र रोमा सब मिट गए जहाँ से

बाकी मगर है अब तक नामोंनिशा हमारा।।'7

अतीत का वैभव ही दासता की शृंखलाओं को तोड़ने की प्रेरणा देता है। मैथिलीशरण गुप्त ने इसी गौरवमयी अतीत का वर्णन किया है और भारत को सभी का सिरमौर बताया है।

देखो विश्व में हमारा कोई उपमान नहीं था

नर देव थे हम, और भारत देव लोक समान था।8

सियारामशरण गुप्त ने 'मौर्य विजय' नामक काव्य ग्रन्थ में वीर चन्द्रगुप्त की कथा के माध्यम से भारतीय लोगों की वीरता का वर्णन किया है। इनके चरित्र इतने उज्ज्वल थे कि कोई भी इनका सामना नहीं कर सकता था। इन महान योद्धाओं की तुलना किसी भी देश के योद्धा नहीं कर पाए। इसी का वर्णन यहाँ किया गया है।

"धीर-वीर ये भारतीय होते हैं कैसे,

किसी देश के मनुज न देखे इनके जैसे

क्या ही उज्ज्वल, गेय चरित इनके होते हैं

ग्रीकों का भी गर्व-कार्य इनके खोते हैं।9

रामायण और महाभारत के वीरों का गौरवगान मैथिलीशरण ने बहुत अधिक किया है। राम और कृष्ण आदि पात्रों की वीरता का वर्णन करके इन्होंने सामान्यजन में भी वीरता के भाव प्रस्फुटित कर दिए हैं। 'जयद्रथ-वध नामक खंडकाव्य में महाभारत कालीन वीरता का वर्णन मिलता है -

"अभिमन्यु षोडश वर्ष का फिर क्यों लड़े रिपु से नहीं,

क्या आर्यवीर विपक्ष-वैभव देखकर डरते कहीं?

सुनकर गजों का घोष उसको समझ निज अपयश-कथा

उन पर झपटता सिंह शिशु भी रोष कर जब सर्वथा।"10

आज की वर्तमान अवस्था देखकर दिनकर को अतीत के वैभव की याद आती है। कवि उसी अतीत वैभव को याद करके करूणा के आँसू बहाकर भिखारिणी सुकुमारी मिथिला का वर्णन करता है।

"पैरों पर ही है पड़ी हुई

मिथिला भिखारिणी सुकुमारी

तू पूछ कहाँ इसने खोई

अपनी अनंत निधियाँ सारी।।"11

निष्कर्ष

हिन्दी कविता में राष्ट्रीयता की भावना प्रमुख रही है। 20वीं शताब्दी के आरम्भ में जब स्वाधीनता संग्राम में तीव्रता आ गई थी, उसी के परिणामस्वरूप हिन्दी कविता में राष्ट्र प्रेम, देशभक्ति आदि विषयों की प्रधानता हो गई। हिन्दी कवि नवजागरण से प्रभावित हुए। इसी से प्रभावित होकर कवियों ने राष्ट्रीयता के गीत गाए। राष्ट्रीय सांस्कृतिक पुनरोत्थान में कवि मैथिलीशरण गुप्त की 'भारत-भारती' पुस्तक नवजागरण की अग्रदूत है। इसमें देश के अतीत गौरवगान से लेकर देशप्रेम की भावना का वर्णन मिलता है। भारतेन्दु काल में अंग्रेजों की स्तुति के साथ-साथ भारतीयता के गीत भी गाए गए। इस काल में यदि राष्ट्रीय भावना या देश के बारे में लिखा जाता था तो उन कवियों की रचनाओं को जब्त कर दिया जाता था या फिर उन कवियों को क्रांतिकारी कहकर जेल में डाल दिया जाता था। राष्ट्रीय भावना से ओतप्रोत काव्य की यह परंपरा द्विवेदी युग में अपने उच्चतम शिखर पर थी। इसलिए इस काल में राष्ट्रीय भावना से परिपूर्ण काव्य लिखा गया।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. रामकुमार वर्मा, धर्मयुग
2. आ. नंददुलारे वाजपेयी, नया साहित्य-नये प्रश्न
3. डॉ. हजारी प्रसाद, चंद्रगुप्त, दूसरा अंक
4. जयशंकर प्रसाद, चंद्रगुप्त, दूसरा अंक
5. इकबाल, वतन के गीत, विनोद पुस्तक मंदर, आगरा
6. निराला, गीतिका
7. इकबाल, वतन के गीत
8. मैथिलीशरण गुप्त, भारत-भारती
9. मैथिलीशरण गुप्त, मौर्य-विजय
10. मैथिलीशरण गुप्त, जयद्रथ-वध
11. रामधारी सिंह दिनकर रेणुका
12. डॉ. सुधाकर शंकर कलवड़े, आधुनिक हिन्दी कविता में राष्ट्रीय भावना।

Corresponding Author

Ramita Devi*

M.A. in Hindi (UGC NET) PGT in Hindi

ramitadevi123@gmail.com